

ग्रामीण विकास में महिलाएं: कृषि, लघु उद्योग और सामाजिक परिवर्तन

रेशमा देवी

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

श्री रामेश्वरदास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय, हाथरस (उ.प्र.)

सारांश:-

भारतवर्ष ग्रामीण पृष्ठभूमि वाला देश है। यहाँ की आधे से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। इन ग्रामीण क्षेत्रों की आधी आबादी महिला हैं। जो कि भारत के विकास हेतु आवश्यक है। ग्रामीण विकास और ग्रामीण विकास में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना। ग्रामीण विकास की परिधि में शिक्षा, संस्कृति, कला, कौशल, चिकित्सा, सामुदायिक विकास, कृषि, सामाजिक सुधार, पशुपालन, उद्योग धंधे, रोजगार का विस्तार, पेयजल, विद्युत की व्यवस्था, संचार और परिवहन की व्यवस्था का विस्तार आदि महत्वपूर्ण है। ग्रामीण महिलाएं घर के अंदर और बाहर कई सामाजिक और आर्थिक भूमिकाएं निभाती हैं, किंतु उनके इस योगदान को समाज में उचित स्थान और मूल्य नहीं मिल पाता तथा ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों का उचित लाभ नहीं मिल पाता है। यह शोध पत्र ग्रामीण विकास और परिवर्तन में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी को समझने का प्रयास करता है। महिलाएं ग्रामीण विकास में प्राचीन काल से योगदान देती आई हैं। ग्रामीण विकास की रीढ़ की हड्डी कृषि, पशुपालन, लघु और कुटीर उद्योग है। इन कार्यों में महिलाओं की भागीदारी अतुलनीय है। कृषि, पशुपालन में महिलाएं पुरुषों के बराबर कार्य करती आई हैं। लघु और कुटीर उद्योग तो मुख्यतः हस्तशिल्प पर आधारित होते हैं जिनमें महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। डॉक्टर आहूजा के अनुसार 'नियमित आय से महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा है और अब वे अपनी आय को बढ़ावा देने के लिए नए- नए कार्य तलाश कर रही हैं।' डॉ. ज्योति जो की श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय तिरुपति से सेवानिवृत्त हैं। उन्होंने बताया कि 'हमने 30 विभिन्न प्रकार के उत्पाद विकसित किए हैं जिनमें खाद्य सामग्री और सौंदर्य प्रसाधन शामिल हैं इसके लिए हमने प्रदर्शनी सह- शिक्षण कार्यक्रम के जरिए महिलाओं को प्रशिक्षित किया है जो महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक है।' इस प्रकार के सैकड़ों प्रयास हमें बताते हैं कि कैसे ग्रामीण संरचना में परिवर्तन आ रहे हैं और ग्रामीण विकास को गति मिल रही है।

मूल शब्द:- संस्कृति, आत्मनिर्भर, परिवर्तन, हस्तक्षेप, ग्रामीण, संरचना, प्रशिक्षण, कार्यक्रम।

परिचय:-

महिलाएं ग्रामीण विकास की नींव हैं। हमारा समाज पितृसत्तात्मक जरूर है किंतु महिलाएं आर्थिक विकास की भागीदारी में पीछे नहीं हैं। जब देश आजाद हुआ तब देश में भयावह गरीबी थी जिससे निपटने के लिए कृषि क्षेत्र में विकास की अति आवश्यकता थी। इसलिए प्रथम पंचवर्षीय योजना का मुख्य लक्ष्य था नहरों और सिंचाई के संसाधनों का विकास करना कृषि संबंधी आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं का योगदान अद्वितीय है। बीजों के संरक्षण से लेकर उसकी बुआई, निराई, गुड़ाई और कटाई तक के सफर में महिलाएं कृषि उत्पाद की हम सफर होती हैं। ग्रामीण महिलाएं, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की वाहक, संरक्षक और पुजारी होती हैं। वह मालिक बनने का कभी प्रयास नहीं करती हैं, तभी तो आज तक भारतीय किसान की बात आने पर हमारे समाज की संरचना में एक पुरुष का चित्र उभर कर आता है। महिला किसान का उल्लेख कहीं वीरले ही मिलता है, किंतु आज की बदलती परिस्थितियों ने महिलाओं की भूमिका को उजागर किया है। आज हम प्रति वर्ष '15 अक्टूबर को महिला किसान दिवस' मनाते हैं जो कि भारत की किसान महिलाओं के प्रति सम्मान का एक प्रतीक है। इस दिन को

वैश्विक स्तर पर 'अंतरराष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है। जहाँ राष्ट्रीय किसान दिवस हम 23 दिसंबर को मनाते हैं, कृषि के क्षेत्र में काम करने वाले श्रम के सम्मान में, वहीं महिला किसान दिवस कृषि के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी और परिश्रम का सम्मान है।

लघु उद्योग मुख्यतः कच्चे माल पर आधारित है। यह कच्चा माल मुख्यतः कृषि उत्पादों पर निर्भर है। इन उद्योगों में खाद्य उत्पाद, हस्तशिल्प, हथकरघा और सौंदर्य उत्पाद सम्मिलित हैं। जिनके लिए महिलाओं को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण, विपणन के लिए मुद्रा योजना, पीएमआईजीपी और मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग योजना जैसी सरकारी और गैर सरकारी योजनाओं का लाभ मिलता है। आज देश में प्रत्येक राज्य में स्वयं सहायता समूहों का गठन व संचालन किया जा रहा है और उनसे ग्रामीण विकास को गति मिल रही है। महिला समूह बना कर कार्य कर रही हैं। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में सशक्त बना रहे हैं। ग्रामीण शक्ति संरचना में महिलाओं की भागीदारी का सबसे बड़ा प्रभाव हमारे संविधान के 73 में संविधान संशोधन में (1992) के द्वारा देखने को मिलता है, जिसमें ग्रामीण शक्ति संरचना में महिलाओं को 33% की भागीदारी सुनिश्चित की गयी है। जिससे आज ग्रामीण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक, सांस्कृतिक संरचना में आमूलचूल परिवर्तन दिखाई देता है। आज महिलाएं अपनी ग्राम पंचायत की मुखिया बन अपने समूह की महिलाओं के लिए रोल मॉडल बन रही हैं।

ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका:-

ग्रामीण शब्द मात्र एक शब्द नहीं है यह एक संपूर्ण जीवन शैली है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री और मानवशास्त्री रेड्फील्ड लिखते हैं कि 'लघु समुदाय पालने से लेकर मृत्यु तक का प्रबंध करते हैं।' रेड्फील्ड ग्रामीण समुदाय को लघु समुदाय की संज्ञा देते हैं। ग्रामीण जीवनशैली को विकास के द्वारा बदला जा रहा है, जो कि आज के विकासवादी दौर की मांग है। आज संपूर्ण विश्व विकास की दौड़ में आगे निकलना चाहता है। इसमें ग्रामीण क्षेत्र कैसे पीछे रह सकता है। ग्रामीण शब्द सुनते ही मन में कच्ची पगडंडी, हरे भरे खेत, बाग, तालाब और कल-कल बहती नदी का चित्र मन में उभरता है। ग्रामीण विकास का अर्थ है पक्की सड़के, पर्याप्त चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार के अवसर प्रदान करना। पूर्व राष्ट्रपति ए.पी. अब्दुल कलाम ने वर्ष 2020 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना चाहते थे और ग्रामीण पलायन को रोकना उनका मुख्य उद्देश्य था। आज ग्रामीण विकास का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में नए-नए आयाम स्थापित करना है। ग्रामीण महिलाएं सतत विकास की प्रमुख चालक हैं, जो आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय बदलाव को गति देती हैं किंतु उन्हें ऋण, स्वास्थ्य सेवा, अन्य सुविधाओं की पहुँच तक पहुँचने में अनेक बाधाएँ भी मिलती हैं। जिनका की ग्रामीण महिलाएं मजबूती से सामना करती हैं। शिक्षा, रोजगार और ग्रामीण विकास के अन्य लाभों तक पहुँच में बदलाव आ रहा है। 2009 के विश्व सर्वेक्षण में कहा गया है कि 'महिलाएं कृषि और ग्रामीण आजीविका में अवैतनिक पारिवारिक श्रम, स्वतंत्र किसानों और मजदूरी के रूप में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, अक्सर भूमि, ऋण और अन्य उत्पादक संपत्तियों तक पहुँच के बिना।' कुछ समाजों में सामाजिक और सांस्कृतिक मापदंड महिलाओं को घर से बाहर कार्य करने से रोकते हैं। जिससे उस समुदाय की कार्यशील महिला आर्थिक रूप से अनुत्पादक हो जाती है। इसके विपरीत कुछ समुदायों में महिलाएँ घर और बाहर दोनों परिवेशों में कार्य करती हैं।

अत्यधिक गरीबी वाले परिवार में महिलाएं मेहनतकश कार्यों में अधिक संलग्न होती हैं। आज ग्रामीण जन जीवन में शिक्षा के महत्त्व को बखूबी समझा जाने लगा है। आज गांव की महिलाएं शिक्षा के क्षेत्र में अपने कैरियर के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा को भी महत्त्व दे रही हैं। पहले ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर महिलाएं कृषि आधारित कार्यों को प्राथमिकता देती थीं किंतु आज के समय में ग्रामीण महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करके गांव का विकास कर रही हैं। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका की विवेचना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है। भारत सरकार

द्वारा ई-हाट प्रारंभ किया गया, इसमें ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं अपने स्वयं से निर्मित वस्तुओं का प्रदर्शन कर सकती हैं। ग्राम पंचायत में विभिन्न समितियों और बैठकों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व और समर्थन को महत्व दिया जा रहा है। सरकार द्वारा महिलाओं के विकास के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं- जैसे उड़ान योजना, जननी सुरक्षा योजना, आदि। ग्रामीण महिलाएं छोटे-छोटे लघु उद्योग प्रारंभ कर रही हैं जैसे कसीदाकारी, सिलाई, बुनाई को वैश्विक मंच पर लाकर आत्मनिर्भर बन रही हैं। जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है और ग्रामीण क्षेत्रों का विकास हो रहा है। गांव की आंधी आबादी में महिलाओं की संख्या अधिक है जब आंधी आबादी और आंधी आबादी एक साथ मिलकर विकास करेंगे तो किसी भी राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।

कृषि क्षेत्र और महिलाएं:-

कृषि क्षेत्र और महिलाएं एक दूसरे के पूरक हैं। ग्रामीण महिलाएं भारतीय समाज में कृषि की रीढ़ हैं। जो उत्पादन से लेकर संबद्ध गतिविधियों तक में महत्वपूर्ण योगदान करती हैं। आज के दौर में कृषि क्षेत्र में मात्र कृषि ही नहीं, बल्कि पशुपालन, मुर्गी पालन, फसल प्रसंस्करण, मत्स्य पालन जैसे कार्य भी सम्मिलित हैं। खेती में भी बागवानी खेती, फूलों की खेती, रेशम कीट पालन, मधुमक्खी पालन, ये सभी गतिविधियाँ कृषि क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन और खेती बाड़ी प्राचीन काल से मुख्य कार्य रहा है। जो कि श्रम प्रधान कार्य है इसमें ग्रामीण महिलाएं पारंगत हैं। जिसमें मवेशी प्रबंधन, चारा संग्रहण, दूध दुहना, निराई, गुड़ाई, कटाई, बीजों का प्रसंस्करण और संरक्षण कार्य प्रमुख हैं। कृषि तथा संबद्ध क्षेत्र में महिलाएं खाद्यान्न उत्पादन पशुपालन, मछली पालन जैसे कार्य महत्वपूर्ण हैं।

आज कृषि का स्त्रीकरण हो रहा है, जिसका मुख्य कारण है ग्रामीण पुरुषों के काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन तथा गांव में खेती बाड़ी के कार्य महिलाओं के जिम्मे आना। आज महिलाएं कृषि उत्पादों का कच्चे माल के रूप में प्रयोग करके शहद के उत्पाद, आचार, मुरब्बा, पापड़, चिप्स जैसे अनेक लघु औद्योगिक इकाइयों बनाकर कृषि उत्पादों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिला रही हैं। जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार कुल महिला श्रमिकों में 55% कृषि मजदूर थी और 24% किसान थी हालांकि मात्र 12.8% जोतो का परिचालन महिला स्वामित्व था। जो कि कृषि के क्षेत्र में लैंगिक भूस्वामित्व असमान्यता को दर्शाता है। लघु और सीमांत भू स्वामित्व में महिलाओं के पास मात्र 25.2% है। भारत में जिन प्रदेशों में मुख्यतः धान की खेती और गन्ने की खेती होती है, वहाँ महिला श्रमिकों को नियोजित करने पर बल दिया जाता है। क्योंकि इन कार्यों को करने के लिए महिला श्रमिक ज्यादा उपयुक्त प्रतीत होते हैं। भारत विविध भौगोलिक बनावट वाला देश है। यहाँ के ग्रामीण परिवेश और कृषि पद्धतियों और उनके उत्पादन में भिन्नता देखने को मिलती हैं। जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में बागवानी फसलें, मैदानों में अनाज और दलहन, तिलहन तटीय क्षेत्रों में नारियल, पाम, खड़ की खेती आदि। इन खेतों में कार्य करने हेतु महिला और पुरुष के मध्य श्रम का विभाजन देखने को मिलता है जैसे तटीय क्षेत्रों में पाम ट्री के मिल्क से मिठाई बनाई जाती है। जिसमें पेड़ों से पानी लाने का कार्य पुरुष करते हैं उस पानी को प्रोसेस करके गुड़ बनाने का कार्य महिलाओं का है। ऐसे ही खेतों से बीज लाना पुरुष का कार्य लेकिन तो उन बीजों को वर्ष भर सहेज कर रखना महिलाओं का कार्य है। इस प्रकार कृषि क्षेत्र में श्रम का विभाजन देखने को मिलता है। यहाँ लैंगिक असमानता दिखाई देती है। इस प्रकार ग्रामीण महिलाएं कृषि के क्षेत्र में पुरुषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती हैं।

लघु तथा कुटीर उद्योग और महिलाएं:-

लघु और कुटीर उद्योग ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर, आर्थिक रूप से सशक्त और सामाजिक रूप से सम्मानित बनाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन रहे हैं। यह घर पर कार्य करने वाली महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। महिला उद्यमिता से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। महिलाएं राष्ट्र के विकास में

पुरुषों के बराबर ही महत्त्व रखती है। लघु और कुटीर उद्योग ने महिला उद्यमियों की सहभागिता ने आर्थिक विकास में एक नया मुकाम स्थापित किया है। भारत के दूर दराज ग्रामीण क्षेत्रों में निवासित महिलाएं जो अशिक्षा, अज्ञानताओं, अंधविश्वासों की जड़ों से जकड़ी हुई हैं। उनके जीवन में लघु एवं कुटीर उद्योगों ने एक नई ऊर्जा का संचार किया है। मोरारजी देसाई का कहना था कि “ ऐसे कुटीर उद्योगों से ग्रामीण लोगों का अधिकांश समय जो बेरोजगार रहते हैं उन्हें पूर्ण या अंशकालिक रोजगार प्राप्त होता है। ” कुटीर उद्योग मुख्यतः घर की चारदीवारी के भीतर कम पूंजी के साथ मुख्यतः घर के लोगों द्वारा बिना मशीन और तकनीकी के संचालित किए जाते हैं, जबकि लघु उद्योगों में हस्त कौशल के साथ-साथ मशीनरी का उपयोग भी किया जाता है तथा छोटी पूंजी और स्थानीय मजदूरों की सहायता से संचालित किए जाते हैं। जिसमें स्थानीय समुदाय की महिलाएं पारंगत होती हैं। जिससे स्थानीय हस्तशिल्प, पापड़ और विभिन्न प्रकार के खाद्य उत्पाद बनाना सम्मिलित है। लघु उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं ग्रामीण विकास को एक नया आयाम प्रदान कर रही हैं।

ग्रामीण महिलाएं और सामाजिक परिवर्तन:-

समाज में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका बहुआयामी है, एक गृहिणी के रूप में घर के काम जैसे इंधन इकट्ठा करना, भोजन हेतु राशन में धान से चावल निकालना, आटा बनाना, दाल निकालना, आदि। खेतों में खेती के कार्य जैसे फसल की बुआई, निराई, गुड़ाई, कटाई और भंडारण करना। पशुपालन में चारा लाना, गोबर इकट्ठा करना, दूध दुहना, बछड़ों की देख-रेख करना और यदि महिला से शिक्षित है तो वह मायके और ससुराल दोनों जगह शिक्षा की रौशनी फैलाती है। इस प्रकार ग्रामीण महिलाओं की भूमिका और प्रस्थिति में बदलाव लाकर ग्रामीण समाज की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचना में परिवर्तन लाया जा रहा है। समाज में महिला की उच्च प्रस्थिति उस समाज के विकास की सूचक है। इसलिए हमारी सरकार ने राशन कार्ड पर पुरुष मुखिया के स्थान पर मुखिया का नाम महिला स्थापित किया है। यह महिलाओं की ग्रामीण समाज में बदलती प्रस्थिति का भी द्योतक है।

आज ग्रामीण महिलाएं राशन की दुकान पर बड़े गर्व से जाती हैं और बोलती हैं कार्ड में हमारा नाम पहले है। यह ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति में सकारात्मक बदलाव है। गांव की सामाजिक व्यवस्था में कृषि तथा पशुपालन अर्थ के महत्वपूर्ण साधन हैं, जो कि महिलाओं के सहयोग के बिना अधूरे हैं। श्रीवास्तव राकेश (2018) 70-80 प्रतिशत कार्य अब महिलाओं के द्वारा किए जा रहे हैं और कृषि श्रम में उनकी भागीदारी लगभग 66 प्रतिशत है, परन्तु भारतीय समाज आज भी किसान शब्द सुनकर पुरुष की ही कल्पना करता है और निर्णयन में महिला भागीदारी कम है किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों में महिलाएं पुरुषों के बराबर भागीदार हैं। ग्रामीण महिलाओं के जीवन में शिक्षा की रौशनी एक प्रकाश स्तंभ से कम नहीं है और आज के दौर में डिजिटल शिक्षा से भी ग्रामीण महिलाएं अब दूर नहीं हैं। शिक्षा मंच और ई-लर्निंग संसाधन साक्षरता में सुधार ला रहे हैं और ग्रामीण महिलाओं के लिए नए-नए रोजगार सृजित हो रहे हैं जैसे बैंक सखी, लखपति दीदी आदि कार्यक्रम ग्रामीण समाज की शैक्षिक स्थिति में परिवर्तन ला रहे हैं। गांव की राजनीतिक संरचना में परिवर्तन तब आया जब 73 में संविधान संशोधन 1992 द्वारा स्थानीय स्वशासन अर्थात् पंचायतीराज प्रारंभ हुआ जिसके द्वारा गांव की राजनीति में महिलाओं को 33% का आरक्षण मिला इस सत्ता के विकेंद्रीकरण ने महिलाओं को राजनीति में भाग लेने हेतु योग्य बनाया। आज ग्रामीण महिलाएं गांव के ग्राम पंचायत से लेकर विधायक सांसद और देश के सर्वोच्च राजनीतिक पदों को सुशोभित कर रही हैं। गांव की राजनीतिक भागीदारी ने ग्रामीण समाज की शक्ति संरचना में महिलाओं को सहभागी बनाया और जिससे परम्परागत ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन आ रहे हैं।

निष्कर्ष:-

भारत गांवों का देश है। आज भी भारत की 69% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि एवं पशु पालन के कार्य की जिम्मेदारी महिलाओं के कंधों पर होती है। प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति उच्च थी किंतु उत्तर वैदिक काल आते-आते महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई महिलाएं सामाजिक और धार्मिक विचारधारा में संकीर्ण शोच की शिकार हो गई और मध्यकाल आते-आते महिलाओं को वस्तु की भांति शत्रु से सुरक्षित रखने के लिए छिपाया जाने लगा और महिलाएं समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियों को कुप्रथाओं का शिकार होने लगी। ब्रिटिश शासनकाल में महिलाओं के लिए शिक्षा संबंधी, सतीप्रथा संबंधित अनेक आंदोलन किये गए। जिनसे महिलाओं के जीवन में सुधार आना प्रारंभ हुआ। इस संपूर्ण सफर में ग्रामीण नारी सदैव पुरुषों की सहचारी बनकर ग्रामीण विकास और कार्यों में सहयोग देती रही। पर्दा प्रथा में सिर पर घूँघट रखकर खेत की निराई, गुड़ाई की तथा आज शिक्षित समाज में नई-नई तकनीक का प्रयोग करके कृषि उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुंचा रही है। ग्रामीण भारत में ग्रामीण महिलाएं विकास की गाड़ी की पहिया है। वे किसान, मजदूर, उद्यमी के रूप में भूमिकाएं निभाती हैं। ग्रामीण महिलाओं को समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए अनेक भेद-भाव पूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ता है। आज भी ग्रामीण महिलाओं को पुरुषों के बराबर कृषि भूमि में स्वामित्व नहीं दिया जाता। असमान लैंगिक भूमिकाओं या भेद-भाव के कारण उनकी कमाई का अधिकतर हिस्सा उनके नियंत्रण में नहीं रहता। काल मार्क्स ने पूँजीवाद के अभिन्न अंग के रूप में अवैतनिक महिला कार्य का विश्लेषण किया है जिसमें बताया है कि “दुनिया की आंधी आबादी आजीवन बिना पारिश्रमिक के कार्य करती है।” काल मार्क्स और एंजिल्स ने प्रजनन के कार्य (बच्चों को जन्म देना, उनका पालन-पोषण करना)का वर्णन एक ऐसे कार्य के रूप में किया है जो समाज के लिए आवश्यक है लेकिन महिलाओं को इसके लिए कोई भुगतान नहीं मिलता ग्रामीण महिलाओं श्रम के साथ – साथ इस प्रजनन के कार्य को करती है जो बाद में पूँजीपति के लिए श्रम बेचते हैं। इसी प्रकार ग्रामीण महिला समाज में अनेक प्रकार के भेद-भाव को झेलते हुए नित नए-नए आयाम स्थापित कर रही है। आज हमारे देश की प्रथम नागरिक महामहिम द्रौपदी मुर्मू जी एक सरल समाज की ग्रामीण महिला हैं। आज ग्रामीण महिलाएं आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और राजनीतिक क्षेत्र में अपनी श्रमशक्ति और प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं।

संदर्भ सूची:-

1. कौर मलकीत एम.एल. शर्मा (1991) ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका, खंड-7, अंक -2 वर्ष 1991 पृष्ठ संख्या 11 से 16
2. रतनानी दीपक (2023) ग्रामीण महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने के सपने को साकार करते महिला प्रौद्योगिकी पार्क, विकास पीडिया भारत सरकार
3. चौरसिया डॉक्टर नीलम (2023) ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में लघु एवं कुटीर उद्योग की भूमिका, पब्लिकेशन: अंक -10 इशू 1 जनवरी 2023, पेज नंबर डी 7182 डी 727
4. इंद्रादेवी रामासामी, सतीश, गीता, दीपलक्ष्मी (2024) ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति पर डिजिटलीकरण के प्रभाव की खोज एक ग्रंथ सूची और अध्ययन बिल्लियों मेट्रिक रिसर्च, खंड आठ, अंक 2025
5. राधिका कपूर (2019) ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति एकता साइंटिफिक एग्रीकल्चर, खंड तीन से आठ डीओआई 10.31080 एससीजी 2019
6. महेश्वरी डॉ. एस.आर. (1990) भारत में स्थानीय शासन, लक्ष्मी प्रकाश आगरा 91990 पृष्ठ संख्या - 17
7. रेड्डी डॉक्टर डब्ल्यू.आर.(2018) ग्रामीण विकास समीक्षा महिला सशक्तिकरण विशेषांक, अंक- 57 (जनवरी जून 2016) आईएसएसएन 09725881 राजेंद्र नगर हैदराबाद

8. डी. एस. चौधरी (1981) इमरजिंग रूलर लीडरशिप इन इंडियन स्टेट, मंथन पब्लिकेशन नई दिल्ली 1981
9. भंडारी साधना पुरोहित अल्का(2022) ग्रामीण विकास में महिलाओं की बदलती तस्वीर, अंक- 10 इंटरनेशनल जनरल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च चार्टर्ड आइएसएस 2320 बैस पेज बी 478- 479
10. सिंह के. सिसौदिया (2016) ग्रामीण विकास सिद्धांत नीतियां और प्रबंधन, 4 संस्करण सेज पब्लिकेशन इंडिया नई दिल्ली
11. सिंह डॉ. शिवराम (2022) भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति शिक्षण संशोधन, जनरल कला मानविकी और सामाजिक विज्ञान, अंक- 5, जून 2022